

सकृदप्याश्रमे वसामः Çāk. 27, 1. 37, 3. 66, 17. सा चित्तपत्नी बुद्ध्या तर्क-  
यामास — कथम् N. 5, 11. Daç. 2, 2. सा चित्तये सदा पुत्र ब्राह्मणस्यास्य  
किं वक्तुम् । प्रियं कुर्यामिति Brāhmaṇ. 1, 7. मनसा चित्तय MBh. in Benf.  
Chr. 38, 1. सुचित्त्य चोक्तम् Hit. I, 19. चित्तयधम् MBh. 3, 2549. चित्तयान  
2, 1748. 3, 12929. चित्तयमान 1715. R. 1, 4, 2. — 2) an Jmd oder Etwas  
denken, nachsinnen über, in Gedanken sich beschäftigen mit, seine Ge-  
danken richten auf; a) mit dem acc.: यद्यहं नैषधादन्यं मनसापि न चि-  
त्तये MBh. 3, 2399. R. 3, 61, 2. न चाप्यचित्तयद्रत्नस्त्वद्भतेनात्तरात्मना 6, 103,  
9. Pañkā. I, 131. Kathās. 4, 115. Kāurap. 1. Dhūrtas. 71, 6. अन्वोऽन्यं  
चित्तयतः Hit. 63, 1. त्वयैव चित्तयमानस्य (मे) Ragh. 1, 64. तेषां गतिमचि-  
त्तयत् MBh. 3, 9916. एकाकी चित्तयेन्नित्यं विविक्ते हितमात्मनः M. 4, 258.  
7, 56. 106. 151. Jāg. 1, 115. 314. R. 1, 2, 23. 43, 3. Hit. Pr. 3. Çāk. 71, 18.  
तस्मादस्य वधं राजा मनसापि न चित्तयेत् M. 8, 381. यो न चित्तयेत् पापम्  
Pañkā. I, 100. भाजनं यो य आह्वयश्चित्तयेत् स स तिष्ठति Kathās. 3, 50.  
तस्माच्चैरस्याप्युपकारिणः श्रेयश्चित्तयेत् Pañkā. 182, 1. एष रथश्चित्तित  
(sobald man nur seiner gedacht hat) आकाशे याति Vet. 36, 8. चित्तितो-  
पनत Vid. 261. चित्तितोपस्वित 48. 78. यथाचित्तितविषयं गतः Pañkā.  
226, 18. अचित्तितो वधः an den man nicht gedacht hatte, unerwartet  
II, 3. Hit. I, 137. — b) mit dem dat.: मनसा चित्तयामास वासुदेवाय Hariv.  
3976. — c) mit dem loc.: सुतेषु दारेषु धनेषु चित्तयन् Bhāg. P. 5, 19, 14.  
— d) mit प्रति und acc.: चित्तयामास — देवराजस्य प्रति MBh. 3, 1714.  
Vgl. u. प्रति. — 3) denken an, beachten, berücksichtigen, seine Auf-  
merksamkeit wenden auf, mit einer Neg.: न स तं चित्तयामास सिंहः  
क्रुद्धो मृगं यथा MBh. 2, 1490. अभिमानेन मत्तः सन्कचिन्नान्यमचित्तयम् 3,  
12521. अचित्तयित्वा तान्वाणान् 6, 5459. Hariv. 9301. R. 6, 73, 40. गुणदो-  
षमचित्तय 5, 77, 11. Hit. I, 177. — 4) ausdenken, ausfindig machen: चि-  
त्तयित्वा तपोविघ्नमुपायम् R. 4, 63, 27. प्रतीकारश्चित्तयताम् Hit. 13, 19. अ-  
स्मदर्थं भवेद्वायमुपायश्चित्तितो मरुत् N. 19, 4. सुचित्तितं चौपधमातुराणां  
न नाममात्रेण करोत्येवम् Hit. I, 162. — 5) in Betracht ziehen, behan-  
deln, besprechen: स्थित्युत्पत्तिप्रत्ययाश्चित्तयेत् यत्र भूतानाम् Sāṃkhyas. 69.  
चतुर्थपादे तु — संदिग्धमानान्यव्यक्ताज्ञादिपदानि चित्तितानि Madhus. in  
Ind. St. 1, 19, 22. — 6) von Jmd denken, eine Meinung über Jmd haben,  
Jmd für Etwas halten: एवं चित्तय मां देव भूत्यो मरुत्मिति Hariv. 14675.  
अथास्य (मणिवरस्य) दर्शनेनाहं दृष्ट्वा तामिव चित्तये es kommt mir vor,  
als wenn ich sie gesehen hätte, R. 5, 67, 7. राज्ञिशब्दभाजनमात्मानमपि  
चित्तयतु भवती bedenke, dass auch du den Titel Königin führst, Mālav.  
12, 18. न त्वां तूष्णं चित्तयामि ich achte dich weniger als einen Grashalm  
P. 2, 3, 17, Sch. — Vgl. das ältere 4. चित्.

— अनु 1) bei sich denken Hariv. 9216. nachdenken, überlegen R. 1,  
13, 23. — 2) Jmdes gedenken, über Etwas nachsinnen, in Gedanken  
sich vorführen; mit dem acc.: वैदर्भमिनुचित्तयन् MBh. 3, 2642. परमं पुरुषं  
दिव्यं याति पार्थानुचित्तयन् Bhāg. 8, 8. R. 2, 39, 3. 41, 16. 4, 29, 6. 5, 20,  
5. Kāurap. 18, 25. Bhāg. P. 4, 8, 70. धर्माश्चि चानुचित्तयेत् M. 4, 92. MBh.  
1, 3402. 2, 1680. 3, 3070. एतद्बुद्धानुचित्तय 16613. Hariv. 3887. R. 4, 8,  
41. हितम् — सैन्यानामनुचित्तय 6, 21, 35. Çāk. 42. Git. 9, 1. Bhāg. P. 4,  
7, 2. — caus. Jmd über Etwas nachsinnen lassen: ततो वयं भगवता व-  
ह्मो धर्माः — अनुचित्तयिताः Saddh. P. 4, 27, a. — Vgl. अनुचित्तन.

— समनु Jmdes gedenken, über Etwas nachsinnen: गङ्गा समनुचित्त-

यत् MBh. 3, 9952. वेदान्बुद्ध्या समनुचित्तय 12, 12393.

— अभि über Etwas nachsinnen MBh. 13, 4341.

— व्या, व्याचित्तयत् Pañkā. 104, 16 fehlerhaft für व्याचि°.

— निम् s. अनिश्चित्य.

— परि 1) bei sich denken Bhāg. P. 6, 18, 22. hin und her sinnend,  
reiflich überlegen: एवं विचार्य बहुशो वार्त्तयः पर्यचित्तयत् । कृदयेन N. 19,  
28. परिचित्तय तु पार्थिव संनिपातो न नः तमः MBh. 4, 1534. सदा परिचि-  
त्तयन् Bhāg. 10, 17. तमेव तावत्परिचित्तय स्वयं कदाचिदेतं यदि योगमर्कतः  
Kumāras. 3, 67. — 2) Jmdes gedenken, über Etwas nachsinnen: तमेव  
नित्यं परिचित्तयन् R. 5, 34, 23. कायमभ्यतरं कृत्स्नमेकाग्रः परिचित्तयेत्  
MBh. 14, 568. यथा धर्ममवाप्नोति तत्कृत् परिचित्तयताम् Hariv. 4409.  
10076. Rāga-Tar. 1, 23. — 3) ausdenken, ausfindig machen: उपायो नि-  
रुपायो ऽयमस्माभिः परिचित्तितः R. 4, 9, 2.

— संपरि ausdenken: अत्रोपायो यथावत् मया संपरिचित्तितः R. 6, 22, 10.

— प्र 1) nachsinnen R. 3, 37, 24. तत्प्रचित्तय काकुत्स्थ कृत्यैतैकेषुणा  
यथा 4, 8, 8. — 2) Etwas denken, nachdenken über, sinnen über: इति प्र-  
चित्तय तत् MBh. 3, 12231. नैकाः स्वार्थान्प्रचित्तयेत् Pañkā. V, 88. मनसापि  
स्वज्ञात्यानां यो ऽनिष्टानि प्रचित्तयेत् I, 332. — 3) ausdenken, ausfindig  
machen: उपायो ऽन्यः प्रचित्तयताम् MBh. 3, 8820. वासश्चैषां प्रचित्तयताम्  
4, 908.

— विप्र gedenken: दुःखानि दत्तान्यपि विप्रचित्तय MBh. 8, 4230.

— प्रति dass.: तस्याश्च रामं प्रातिचित्तयत्याः पत्युः कुलं स्वं च कुलम्  
R. 5, 28, 11. 33, 39 (med.). Kāurap. 22.

— वि 1) unterscheiden, wahrnehmen: भूतेषु भूतेषु विचित्तय धीराः प्रे-  
त्यास्माहोकादमृता भवन्ति Kenop. 13. — 2) bei sich denken, überlegen,  
nachdenken: विचित्तयेवम् N. 10, 17. R. 5, 30, 15. Pañkā. 23, 10. 33, 5.  
104, 16. Vid. 98. 108. 263. तूष्णं विचित्तय Hit. 29, 19. 43, 1. Çāk. 30, 3. 36,  
3. Vikr. 4, 2. Vid. 70. Rāga-Tar. 3, 307. Dhūrtas. 76, 3. — 3) an Jmd  
oder Etwas denken, nachsinnen über, sich in Gedanken womit be-  
schäftigen; mit dem acc.: तथैवार्थं विचित्तयन् R. 2, 89, 4. 3, 79, 19. Çāk.  
76. Mālav. 78. (तस्य) तं विचित्तयतः शापम् MBh. 1, 4883. 3, 1876. तमेवार्थं  
वित्तयन् 2, 1647. 3, 16691. मनसेदं व्यचित्तयम् 1, 5190. तेन मृत्युं विचि-  
त्तये MBh. 2, 1696. R. 2, 83, 26. स च विभवतयादेशात्तरगमनं व्यचित्तयत्  
Pañkā. 99, 20. I, 113. mit dem infin. R. 6, 82, 94. — 4) in Betracht zie-  
hen, berücksichtigen, beachten: अस्मान्साधु विचित्तय संयमधनानुज्ञैःकुलं  
चात्मनस्त्वयस्याः कथमप्यत्रान्धवक्ताः स्नेहप्रवृत्तिं च ताम् Çāk. 92. एता-  
न्गुणान्सत विचित्तयेया कन्या Pañkā. III, 221. श्रेष्ठा वयं धन्यतमाः य-  
दत्र त्यक्ताः पितृभ्यां न विचित्तयामः dass wir uns darum nicht kümmern  
Bhāg. P. 7, 2, 38. न चापि दर्शनं हरे तस्या वाप्या विचित्तये R. 3, 78, 11. सेन्द्रा-  
नपि सुरान्बुद्धे समस्तां विचित्तये 40, 21. — 5) ausdenken, ausfindig ma-  
chen: वनमन्यद्विचित्तयताम् MBh. 3, 1445. तद्विचित्तयतां विनिपातप्रती-  
कारः Pañkā. 92, 6. — 6) sich Etwas vorstellen: एतावाँल्लोकविन्यासो  
मानसलक्षणसंस्थाभिर्विचित्तितः कविभिः Bhāg. P. 5, 20, 38. — Vgl. विचि-  
त्तन fgg.

— अनुवि in der Erinnerung zurückerufen: तामेव द्रिक्चित्तयामनुवि-  
चित्तयमानः Saddh. P. 4, 24, b.

— प्रावि denken an, nachsinnen über: सा तु त्वयं च गन्धं च मर्त्यैः प्र-  
विचित्तय तम् MBh. 1, 4296. अद्यात्मगतिम् 12, 13722. सर्वथा सागरजले